L-1 प्रारंभिक नगरों की कहानी- हड़प्पा सभ्यता का पुरातत्व

Q) पुरातत्व क्या है?

Ans) पुरातत्व इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है जिस ऐतिहासिक तथ्य को पुरातत्व का समर्थन प्राप्त नहीं है। उसकी नींव बालू पर टिकी होती है। समकालीन सामग्री ही पुरातात्विक सामग्री कहलाती है। हमारा वही इतिहास प्रमाणिक है जो ऐसी सामग्री के आधार पर बनाकर लिखा जाता है। विभिन्न स्थानों पर उत्खनन कर पुरातात्विक सामग्री की खोज करने वाले विद्वान पुरातत्ववेत्ता अथवा पुराविद कहलाते है। पुराविद धरती के भीतर छिपी हुई सामग्री द्वारा किसी भी देश के इतिहास की सीमा को पीछे धकेल सकते है। सही मायनो से पुरातत्व वह विज्ञान है जिसके माध्यम से पृथ्वी के गर्भ से खुदाई कर अतीत के लोगो के भौतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

Q) पुरातत्व वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गए हड़प्पा सभ्यता के किन्ही चार नगरो के नाम लिखकर इसकी चर्चा करें।

Ans) पुराविदों ने हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलो से उत्खनन द्वारा विभिन्न सामग्री प्राप्त की और उसी के आधार पर रिपोर्ट तैयार की। हड़प्पा सभ्यता के कुछ प्रमुख शहर निम्न है।

i) मोहनजोदाड़ो – मोहनजोदाड़ो सिंधी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है- मृतकों का टीला। मोहनजोदाड़ो के आस-पास की भूमि बड़ी उपजाऊ थी। इसे सिंध का बाग भी कहा जाता था। यहाँ से 1,398 मोहरे, पुजारी का सिर, मोम के साँचे, कांस्य की मूर्तियाँ, सीप का

पैमाना, सूती कपड़े के अवशेष, पानी का जहाज, हाथी का कपाल, गाड़ी के पहिये, मैसोपोटामिया की मोहरें, दाढ़ी वाले मनुष्य की प्रतिमा, हाथी दांत के तराजू आदि वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।

ii) हड़प्पा – यहाँ से स्त्री की एक मूर्ति जिसके गर्भ से पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है। ऐसा माना जाता है कि यह मूर्ति सम्भवतः धरती माँ की है। यहाँ से ठोस पहिए वाली गाड़ी, लकड़ी का हल, लेख युक्त बर्तन, मुखौटे, शंख का बैल, ताँबे की मोहरें, जौ, गेहूँ की भूसी, मटर व तिल की खेती एवं खरगोश के चित्र वाली मुद्रा मिली है।

iii) चन्हूदड़ो – यहाँ से मनके बनाने का कारखाना, अलंकृत हाथी, पीतल की बत्तख, लिपस्टीक, तराजू एवं बैलगाड़ी आदि मिले हैं। यह मोहनजोदड़ो से 128 कि॰मी॰ दूर स्थित है।

iv) लोथल – यहाँ से फारस की मोहरें, धान व बाजरे की खेती के प्रमाण, आटा पीसने वाली चक्की, हाथी दाँत का पैमाना, मनकों का कारखाना, कुत्ते की मूर्ति, बकरी की हड्डियों के प्रमाण मिले हैं।

v) कालीबंगा – यहाँ से अग्नि-कुंड, बेलनाकार मोहरें, अलंकृत फर्श, ताँबे के बैल की मूर्ति, लकड़ी की नाली, नक्काशीदार ईंटें, हल से जुते खेत के साक्ष्य एवं भूकम्प के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं।

vi) बनावली – यहाँ से चक्राकार बस्तियाँ, नाक व कान की बालियाँ, मछली पकड़ने का काँटा एवं मिट्टी से बने खिलौने आदि मिले हैं।

Scanned with CamScanner

Q) कार्बन - 14 विधि के बारे में आप क्या जानते है?

Ans) तिथि निर्धारण की वैज्ञानिक विधि को कार्बन-14 विधि के नाम से जाना जाता है। इस विधि की खोज अमेरिका के प्रख्यात एसायन शास्त्री - डी० एफ० लिवी द्वारा सन् 1946 ई० में की गई थी। इस विधि के अनुसार किसी भी जीवित वस्तु में कार्बन-12 एवं कार्बन-14 समान मात्रा में पाया जाता है। मृत्यु अथवा विनाश की अवस्था में कार्बन-12 तो स्थिर रहता है। मगर कार्बन-14 लगातार कम होने लगता है। कार्बन का अर्ध-आयुकाल 5568 ± 30 वर्ष होता है। अर्थात् कितने वर्षों में उस पदार्थ में कार्बन-14 की मात्रा आधी रह जाती है। इस प्रकार वस्तु के काल की गणना की जाती है। जिस पदार्थ में कार्बन-14 की मात्रा जितनी कम होती है। वह उतना ही प्राचीनतम माना जाता है। पदार्थों में कार्बन-14 के कम होने की प्रक्रिया को रेडियो धर्मिता (Radio Activity) कहा जाता है।

Scanned with CamScanner